فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۭ﴿٧﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे

شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾ ع

उसे देखेगा[11]

ع ٢٤

ايـاتها ١١ ﴿١٠٠ سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ١٤﴾ ركوعها ١

सूरए आ़दियात मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿١﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿٢﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿٣﴾

क़सम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई[2] फिर पथ्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर[3] फिर सुब्ह़ होते ताराज करते हैं[4]

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿٥﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का

لَكَنُوْدٌ ۚ﴿٦﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ﴿٧﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ

बड़ा नाशुक्रा है[5] और बेशक वोह इस पर[6] ख़ुद गवाह है और बेशक वोह माल की चाहत में ज़रूर

لَشَدِيْدٌ ۭ﴿٨﴾ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۙ﴿٩﴾ وَحُصِّلَ مَا فِي

कर्रा है[7] तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे[8] जो क़ब्रों में हैं और खोल दी जाएगी[9] जो

11 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हर मोमिन व काफ़िर को रोजे़ क़ियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे, मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर **अल्लाह** तआ़ला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद कर दी जाएंगी क्यूं कि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उस को अ़ज़ाब किया जाएगा। मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आख़िरत में उस के साथ कोई बदी न होगी। इस आयत में तरग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब (डराना) है कि गुनाह छोटा सा भी वबाल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह फ़रमाया है कि पहली आयत मोमिनीन के ह़क़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के। **1 :** "सूरए وَالْعٰدِيٰت" बक़ौले ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक्किय्या है और बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मदनिय्या। इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे और एक सो त्रेसठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** मुराद इन से ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उन के सीनों से आवाज़ें निकलती हैं। **3 :** जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं। **4 :** दुश्मन को **5 :** कि उस की ने'मतों से मुकर जाता है। **6 :** अपने अ़मल से **7 :** निहायत क़वी व तुवाना है और इबादत के लिये कमज़ोर। **8 :** मुर्दे **9 :** वोह ह़क़ीक़त या वोह नेकी व बदी।

ع ٢٥ الصُّدُوْرِ ۙ﴿١٠﴾ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿١١﴾ ع

सीनों में है बेशक उन के रब को उस दिन[10] उन की सब ख़बर है[11]

اٰياتها ١١ | ١٠١ سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ ٣٠ | ركوعها ١

सूरए क़ारिअ़ह मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿٢﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ﴿٣﴾

दिल दहलाने वाली क्या वोह दहलाने वाली और तू ने क्या जाना क्या है दहलाने वाली[2]

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿٤﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ

जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे[3] और पहाड़ होंगे जैसे धुन्की (धुनी हुई)

الْمَنْفُوْشِ ؕ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿٦﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ

ऊन[4] तो जिस की तोलें भारी हुईं[5] वोह तो मन मानते ऐश में

رَّاضِيَةٍ ؕ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿٨﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ﴿٩﴾ وَمَاۤ

हैं[6] और जिस की तोलें हलकी पड़ीं[7] वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है[8] और तू

ع ٢٦ اَدْرٰىكَ مَاهِيَهْ ؕ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾ ع

ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली एक आग शो'ले मारती[9]

---

10 : या'नी रोज़े क़ियामत जो फ़ैसले का दिन है। 11 : जैसी कि हमेशा है, तो उन्हें आ'माले नेक व बद का बदला देगा। 1 : सूरए "अल क़ारिअ़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, छत्तीस कलिमे, एक सो बावन ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इस से क़ियामत है जिस की होल व हैबत से दिल दहलेंगे और "क़ारिअ़ह" क़ियामत के नामों से एक नाम है। 3 : या'नी जिस त़रह़ पतंगे शो'ले पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उन के लिये कोई एक जिहत मुअ़य्यन नहीं होती हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहत से जाता है, येही ह़ाल रोज़े क़ियामत ख़ल्क़ के इन्तिशार का होगा। 4 : जिस के अज्ज़ा मुतफ़र्रिक़ हो कर उड़ते हैं, येही ह़ाल क़ियामत के होल व दहशत से पहाड़ों का होगा। 5 : और वज़्न दार अ़मल या'नी नेकियां ज़ियादा हुईं 6 : या'नी जन्नत में। मोमिन की नेकियां अच्छी सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी तो अगर वोह ग़ालिब हुईं तो उस के लिये जन्नत है और काफ़िर की बुराइयां बद तरीन सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी और तोल हलकी पड़ेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बात़िल हैं, उन का कुछ वज़्न नहीं, तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। 7 : ब सबब इस के कि वोह बात़िल का इत्तिबाअ़ करता था 8 : या'नी उस का मस्कन आतशे दोज़ख़ है। 9 : जिस में इन्तिहा की सोज़िश व तेज़ी है। अल्लाह तआ़ला उस से पनाह में रखे।